शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

की प्रस्तुति

शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक गीतों का संकलन

गीतांजलि सृजन

(माह - मार्च 2023)

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 01-03-2023

दिन- बुधवार

235

तर्ज - ना कजरे की धार

गीत- दहेज प्रथा

न दहेज की माँग,
न माँगे कोई कार।
न माँगे कोई दुकान,
शादी कितनी सुन्दर हो।।
शादी कितनी सुन्दर हो....

न बेटी से कोई बड़ा,
न दहेज के लिए कोई लड़ा।
कर्ज में न हो बाप खड़ा,
तो शादी कितनी सुन्दर हो।।

बेटी को जिसने पाला,
बेटी ही है गहना।
बेटी लाड़ो पूरे घर की,
इस लाड़ो का क्या कहना?
बेटी खुशबू जब बने बहू,
घर को देती संवार।।
न दहेज की माँग....

बेटी ने करी पढ़ाई,
फिर भी तेरे घर में आयी।
बचपन के साथी छोड़े,
छोड़े प्यारे बहन-भाई।
थी बेटी, सब भूली,
तेरा घर दिया सजा।।
न दहेज की माँग....

जब दहेज में माँगे सोना,
तब बेटी छिपकर कर रोती।
मेरे पापा ने मुझको पाला,
काश मैं न होती।
मेरे पापा, क्यों पाला?
कोख में देते मार।।
न दहेज़ की माँग....

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 02-03-2023

दिन- गुरुवार

236

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं...

गीत- परिश्रम से होते सफल सब करम...

कहूँ तुमसे बच्चों मैं समझो मरम।
परिश्रम से होते सफल सब करम।।
कहूँ तुमसे बच्चों.....मरम।

यही है तेरा धर्म, उन्नति इसी में,
बड़ों की लहो सीख, हो जीवन खुशी में।।
कभी भी न आये..हाँ..कभी भी न
आयेगा संकट परम।
कहूँ तुमसे बच्चों.....मरम।।

करो पूर्ण तैयारी, कसर शेष हो ना।
सफल होगे हरदम, कोई भ्रम रहे ना।
गुरु मन्त्र है ये..हाँ..गुरु मन्त्र है ये
हाँ सबसे अगम।
कहूँ तुमसे बच्चों.....मरम।।

जगत में सभी कर्म करते, सफल हों।
कभी भी बबूलों के न बीज तुम बो।।
रहोगे सुखी तुम..हाँ.. रहोगे सुखी तुम,
न हों कोई ग़म।
कहूँ तुमसे बच्चों मैं समझो मरम।।
परिश्रम से होते सफल सब करम।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 03-03-2023

दिन- शुक्रवार

237

तर्ज- तुझे सूरज कहूँ या चन्दा...

गीत- मेवाड़ वंश के शासक...

मेवाड़ वंश के शासक,
महाराणा प्रताप थे प्यारे।
इतिहास गवाही देता,
गुण छिपे थे इनमें सारे।।

नौ मई पन्द्रह सौ चालीस,
राजा उदय सिंह के घर में।
राणा प्रताप जब जन्मे,
खुशियाँ छायी अम्बर में।
वीर, पराक्रमी योद्धा संग,
अद्भुत राणा के नजारे।
इतिहास गवाही देता,
गुण छिपे थे इनमें सारे।।

संघर्ष भरे जीवन से,
ये कभी नहीं घबराये।
जंगल को घर बनाया,
और घास की रोटी खाये।
हल्दीघाटी के युद्ध में,
बड़े-बड़े से योद्धा पछारे।
इतिहास गवाही देता,
गुण छिपे थे इनमें सारे।।

भारत मां ने बलशाली,
अपने इस लाल को खोया।
संसार का एक-एक प्राणी,
तब फफक-फफक कर रोया।
है शत-शत नमन हमारा,
कदमों में राणा तुम्हारे।
इतिहास गवाही देता,
गुण छिपे थे इनमें सारे।।

रचना
मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 04.03.2023

दिन- शनिवार

238

आया होली का त्योहार

तर्ज - होलिया में उड़े रे गुलाल

आया-आया होली का त्योहार,
खेलो होली खेलो रे।
आयी-आयी देखो, रंग की बौछार,
खेलो होली खेलो रे।।

डाल रही रंग सारी सखियाँ,
बचा के रखना अपनी अँखियाँ।
आयी पिचकारी की फुहार,
खेलो होली खेलो रे।।

पापड़, मठरी, गुझिया खा लो,
रंग, अबीर, गुलाल लगा लो।
व्यंजनों की लगी भरमार,
खेलो होली खेलो रे।।

पानी भरकर मारे गुब्बारे,
काले-पीले चेहरे हैं सारे।
रंगों से किया सरोबार,
खेलो होली खेलो रे।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
क्षेत्र- धनीपुर, अलीगढ़, उ०प्र०

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 06/03/2023

दिन- सोमवार

239

तर्ज- करती हूं तुम्हारी पूजा

सरस्वती वन्दना

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

करती हूँ तुम्हारी पूजा स्वीकार करो माँ
दान कर दो विद्या का उपकार करो माँ।
उपकार करो माँ
हे! माँ सरस्वती, हे! माँ सरस्वती।।
करती हूँ तुम्हारी पूजा स्वीकार करो माँ
दान कर दो विद्या का उपकार करो माँ।
उपकार करो माँ
हे! माँ सरस्वती, हे! माँ सरस्वती।।

अज्ञान हूँ, अन्जान हूँ, मैया तेरे संसार में।
अज्ञान हूँ अन्जान हूँ, मैया तेरे संसार में।
करते दुखड़े दूर सारे, मैं आई तेरे द्वार में।
ज्ञान की ज्योति जला कर
ज्ञान की ज्योति जला कर,उद्धार करो माँ,
दान कर दो विद्या का उपकार करो माँ
हे! माँ सरस्वती हे! माँ सरस्वती।।

हंसवाहिनी ज्ञान की देवी, हर बाधा दूर करो।
हंस वाहिनी ज्ञान की देवी हर बाधा दूर करो।
मन मन्दिर में बिहरें मैया हिय में तुम वास करो।
चमका दो मेरी भी किस्मत,
चमका दो मेरी भी किस्मत चमत्कार करो माँ
दान कर दो विद्या का उपकार करो माँ
हे! माँ सरस्वती, हे! माँ सरस्वती,

करती हूँ तुम्हारी पूजा स्वीकार करो माँ
दान कर दो विद्या का उपकार करो माँ
उपकार करो माँ
हे!माँ सरस्वती हे!माँ सरस्वती।।

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 07.03.2023

दिन- मंगलवार

240

तर्ज़....जय जय शिव शंकर....

गीत - निपुण भारत

यह बच्चे प्यारे-प्यारे,
सबकी आँखों के तारे,
कि रोशन इनको नाम करना।
निपुण लक्ष्य पाकर,
कक्षा में अव्वल आकर,
इनको चमत्कार करना।।

पाँच शब्दों के वाक्य कक्षा एक में पढ़ने,
दो के बच्चे लगे, कहानी को गढ़ने,
कि केंद्रित इनको ध्यान करना।।

कक्षा तीन के बच्चे,
पाठ को लग गए पढ़ने।
तीव्र गति से पढ़कर,
लगे सोच समझने।
कि इनको समझदार बनना।।

हम सभी अध्यापक,
पढ़ाएँ मन लगाकर।
चैन ना ले तब तक,
लक्ष्य हासिल ना हो जब तक।
रोशन उत्तर प्रदेश का नाम करना।।
निपुण लक्ष्य पाकर,
जिले को निपुण बनाक,
बागपत जिला महान करना।।

रचना - सीमा शर्मा (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 8/03/2023

दिन- बुधवार

241 गीत- देखो बरसे गुलाल रंग-रंग

तर्ज़- लोकगीत

मन में हिलोर चले, लोग लगें भले-भले,
सब में है छाई उमंग।
होली है आज देखो होली है आज,
देखो बरसे गुलाल रंग-रंग।।

शीत ऋतु बीता, फागुन गइले आई,
टेसू औ सेमल रहे मुसकाई।
बोले पपीहा, मयूर है मगन,
होली है आज देखो.....।।

बने हर घरवा में गुझिया-मलाई,
प्रेम औ सौहार्द्र हर दिल में समाई।
गुलाबी रंगवा से भीगे बदन,
होली है आज देखो.....।।

बीते बरस की भी यादें हैं ताजी,
स्नेहिल मिलन की है आस फिर जागी।
सचमुच लगे प्यारा आपन वतन,
होली है आज देखो.....।।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०–बड़ागाँव
जनपद–वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 09/03/2023

दिन- गुरुवार

242

तर्ज- नदिया चले चले रे धारा

सच्चा इन्सान

सुख-दु:ख आते-जाते भाई,
यह है जीवन की सच्चाई।
जीवन सुखद बनाने को,
खुशी-खुशी जीना होगा।।

संघर्षो से डरे नहीं जो,
विपदाओं से हटे नहीं जो।
रहे सामने खड़ा जो डटके,
काम करे जो सबसे हटके।
इन्सां ऐसा बनना होगा।।
खुशी-खुशी----

आँधी आये या तूफान,
शत्रु चाहे जितना बलवान।
रखे संजोकर मूल्य जो अपने,
कहलाता है वही महान।
महान हमें बनना होगा।।
खुशी-खुशी----

ईमानदार वही है जग में,
मौकें मिले भले ही कितने।
रखा हो खुद को पहले,
लालच पीछे रखा जिसने।
अटल खुद को रखना होगा।।
खुशी-खुशी----

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 10/03/2023

दिन- शुक्रवार

243

तर्ज: थोड़ा सा प्यार हुआ है....

गीत: नारी

नारी सम्पूर्ण जगत की,
ऐसी इक डोर है।
नारी बिन इस दुनिया में,
अँधकार चहुँ ओर है।।

ये जगत की ऐसी धुरी,
इसके बिन न चलता जीवन।
इससे ही रोशन दो कुल,
इससे ही महके आँगन।
मोड़ दे रुख आँधी का,
चले जिस ओर है।।

नारी में सृष्टि समायी,
दुर्गा और काली माई।
यही तो जग जननी है,
यही है लक्ष्मीबाई।
एक तरफ ये प्रेम पुजारन,
रणचण्डी दूजी ओर है।।

जन्म से जननी तक की,
अमिट निशानी नारी।
त्याग करुणा ममता की,
कहे कहानी सारी।
निशा और संध्या संग-संग,
ये सुहानी भोर है।।

रचना🙏

डॉ० शालिनी गुप्ता (स०अ०)
उ० प्रा० वि० मुर्धवा (कंपोजिट)
म्योरपुर, सोनभद्र

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 11-03-2023

दिन- शनिवार

244

फगुआ

तर्ज़ ~ लोकगीत

होलिया में उड़ेला अबिरिया,
हो रामा! अवध नगरिया।
अवध नगरिया हो राम के दुवरिया।।
होलिया में....

सीता जी क भीजेला लाली चुनरिया,
मथवा पर चम-चम चमकेला बिन्दिया।
दूनों हाथे मार पिचकारिया हो रामा!
अवध नगरिया...

राम-लखन हाथ सोहे पिचकारी,
भीगे अवधपुर के सब नर-नारी।
चारों ओर छाई खुमारिया हो रामा!
अवध नगरिया....

सब सखियाँ मिल फगुआ गावेली,
भर-भर थारी मैया मोतिया लुटावेली।
खुशियां में डूबल नगरिया हो रामा!
अवध नगरिया....

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

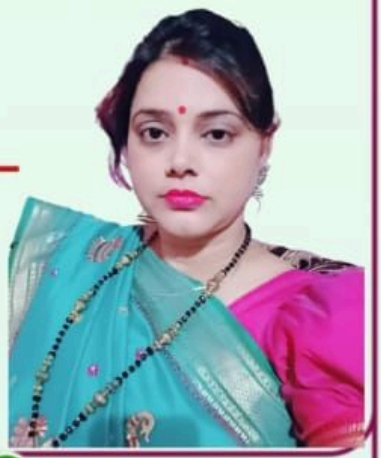

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 13.03.2023

दिन- सोमवार

245

गीत-इन पेड़ों को न काटो....

तर्ज- दिल दीवाना ना जाने कब खो गया...

इन पेड़ों को...
हो..
इन पेड़ों को न काटो तुम मान लो...
होती इनमें जान है कहना मान लो...
इन पेड़ों को न काटो तुम मान लो...
होती इनमें जान है कहना मान लो...
तुम मान लो, तुम मान लो,
तुम मान लो मेरी बात...
इन पेड़ों को न काटो तुम मान लो...
होती इनमें जान है कहना मान लो...

इन फूलों में रंग है, इन कलियों में जान है...
लहराती ये डालियाँ धरती की बहार हैं....
रू रू रू रू रू रु रु रू रू रू रू रू रु...
ल ल ल ल ल ला ला ल ला ल ला ला ला ...
इन फूलों में रंग है, इन कलियों में जान है...
लहराती ये डालियाँ धरती की बहार हैं....

सींचो इन्हें, पालो इन्हें...
जीवन हैं ये, सँभालो इन्हें...
तुम मान लो, तुम मान लो,
तुम मान लो मेरी बात...
इन पेड़ों को न काटो तुम मान लो...
होती इनमें जान है कहना मान लो...

इन पेड़ों को न काटो तुम मान लो...
होती इनमें जान है कहना मान लो...
ये लाते हैं वर्षा, ये देते हैं जीवन...
ये दुनिया की शोभा, सजाते हैं कण-कण...
न काटो, जलाओ, न इनको मिटाओ...
है शोभा जो सबकी, उन्हें सब सजाओ...

रचना

शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 14-03-2023

दिन- मंगलवार

246

तर्ज- दिल दीवाने का डोला...

गीत- नव संवत्सर अब लागा...

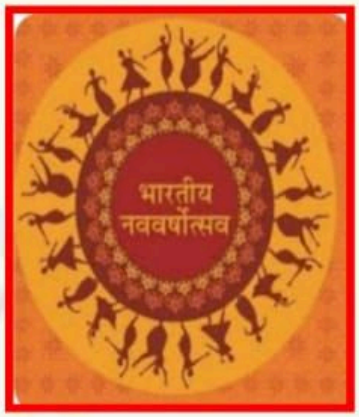

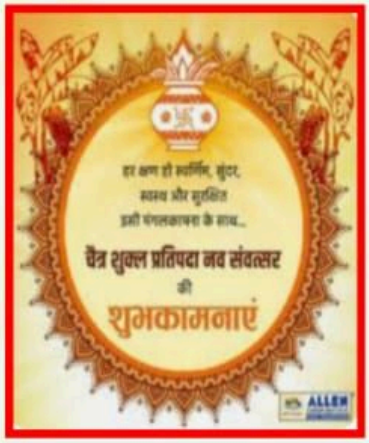

नव संवत्सर अब लागा खुशहाल नर हुए।
मधु ऋतु में हुआ बसन्त का त्योहार खुश हुए।।
नव संवत्सर अब लागा खुशहाल नर हुए।।-2

पशु-पक्षी चहकें डाली।
फैली चहुँ दिशि हरियाली।।
मेरे मन से हटी दुबिधारी।
हर्षित मेरा हो..ओ..ओ
हर्षित मेरा मन बोला, खुशहाल नर हुए.....

देखो पेड़ों की डालीं।
हैं झूमें चले बयारी।।
लगी हैं कटने फसलें सारी।।
आ होली ने हो..ओ..ओ..
आ होली ने रंग घोला, खुशहाल नर हुए,.....

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 15.03.2023

दिन- बुधवार

247

तर्ज़....दोहा....

गीत - महादेवी वर्मा

पिता श्री गोविन्द थे, हेमरानि थीं मात।
सन उन्नीस सौ सात की, बतलाऊँ मैं बात।।
छायावादी काल की, रचनाकार महान।
मीरा अर्वाचीन से, इनकी है पहचान।।

गद्य विधा लेखन सुलभ, महादेवि था नाम।
धर्म ग्रंथ के क्षेत्र में, इनको अद्भुत ज्ञान।।
सप्तपर्ण अरु नीरजा, रश्मि और नीहार।
दीपशिखा, संक्षेप में, ग्रंथ रचे भरमार।।

पद्म विभूषण अरु मिला, ज्ञानपीठ सम्मान।
रेखाचित्र व संस्मरण, लिखे निबन्ध महान।।
अध्यापन, लेखन सहित, संपादन के कार्य।
महिला विद्यापीठ की, रहीं प्रधानाचार्य।

हिन्दी के उत्थान में, किया अलौकिक काम।
हिन्दी भाषा जगत में, स्वर्णिम नाम सुनाम।।
साहित्यिक बोली खड़ी, छायावादी भाव।
पीड़ा करुणा वेदना, भाव का रहा प्रभाव।।

इक संयासिन की तरह, जीवन किया व्यतीत।
दर्पण तक देखा नही, मन पर इनकी जीत।।
हिन्दी के साहित्य को, देकर स्वर्णिम नाम
महादेवि निज देह तज, चली गई सुरधाम।।

रचना - मंजू शर्मा (स0अ0)
प्रा0 वि0 नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 16-03-2023

दिन- गुरुवार

248

अजन्मी बेटी की पुकार

तर्ज - बाबुल की दुआएं लेती जा....

अन्त ही करना था मेरा, तो क्यों किया आबाद मुझे?
मैं भूल नहीं सकती कुछ भी, तेरी हर बात है याद मुझे।

मेरे होने की शंका से, सारे दिन ही तू रोयी थी,
मेरे खोने की शंका से, तू सारी रात ना सोयी थी।
फिर माँ क्यों मुझसे रुठ गयी, और दे दिया आघात मुझे,
मैं भूल नहीं सकती कुछ भी, तेरी हर बात है याद मुझे।।
अन्त ही करना था मेरा, तो क्यों किया आबाद मुझे?.....

तूने माँ मुझको जन्म दिया, और फिर मरने को छोड़ दिया,
जीने का वादा कर करके, अपना वादा क्यों तोड़ दिया?
मुझको कूड़े में फेंक दिया, क्यों किया यूं बर्बाद मुझे?
मैं भूल नहीं सकती कुछ भी, तेरी हर बात है याद मुझे।।
अन्त ही करना था मेरा, तो क्यों किया आबाद मुझे?.....

बेटी हो चाहे बेटा हो, दोनों ही घर की शान हैं,
बेटा यदि कुल का दीपक है, तो बेटी घर की आन है।
मेरी यह सबसे विनती है, कर दो अब तो आजाद मुझे,
मैं भूल नहीं सकती कुछ भी तेरी हर बात है याद मुझे।।
अन्त ही करना था मेरा, तो क्यों किया आबाद मुझे?.....

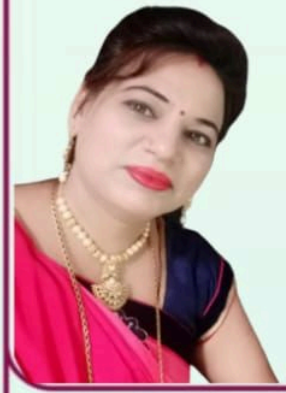

रचना

हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 17/03/2023

दिन- शुक्रवार

249 गीत- बेटी अनमोल रतन

तर्ज़- तेरे जैसा यार कहाँ

बेटी अनमोल रतन,
बेटी से क्या घबराना?
बेटी किसी से नहीं कम,
इनसे ही है जमाना।।

ये जिंदगी सँवारे,
सेवा का भाव लेकर।
खुशियाँ दें घर में अद्भुत,
अपने को समर्पित कर।।

बेटी सुखदायी है,
हर किसी ने जाना।
बेटी किसी से नहीं कम,
इनसे ही है जमाना।।

मिल पाए यदि संसाधन,
बेटी भी वो बन पाएँ।
जिसकी तमन्ना में हम,
बेटों को पा इतराएँ।।

बेटी एक बगिया है,
सींच इसे हरषाना।
बेटी किसी से नहीं कम,
इनसे ही है जमाना।।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०-बड़ागाँव
जनपद-वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 18/03/2023

दिन- शनिवार

250

स्वच्छता अभियान गीत

तर्ज- ज्योति से ज्योति जलाते चलो

हाथ से हाथ मिलाते चलो,
भारत को स्वच्छ बनाते चलो।।
रह न पाये कोई गन्दगी,
सबको यह समझाते चलो।।
हाथ से हाथ मिलाते....

स्वच्छ बनेगा भारत अपना,
गाँधी जी का सपना।
मोदी जी ने अभियान चलाया,
घर-घर में पहुँचाया।।
फायदे सफाई के बताते चलो,
भारत को स्वच्छ...
हाथ से हाथ मिलाते....

हर जगह तुम कचरा न फेंको,
सफाई को समझो जिम्मेदारी।
धरती माता साफ रखो तुम,
बन जाये फुलवारी।।
व्यक्तिगत सफाई अपनाते चलो,
भारत को स्वच्छ...
हाथ से हाथ मिलाते.....

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 20/03/2023

दिन- सोमवार

251

तर्ज- एक हजारों में मेरी बहना

हौसला

मुश्किलों से तुझे अब ना डरना है,
रख हौसला यूँ ही आगे बढ़ना है।
तूफानों को अब पार करना है।।
मुश्किलों से तुझे.....

मुश्किलें तो आती है आएँगी जरूर,
कभी तेरे अपने भी हो जाएँगे दूर।
अश्कों को जीतकर हर पल हँसना है,
रख हौसला यूँ ही आगे बढ़ना है।।
तूफानों को अब पार करना है।।
मुश्किलों से तुझे.....

आती-जाती लहरों में नैया डोलेगी,
साहिल के सुकूं से ही हासिल छू लेगी।
तकदीर का लिखा खुद बदलना है,
रख हौसला यूँ ही आगे बढ़ना है।।
तूफानों को अब पार करना है।।
मुश्किलों से तुझे.....

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 21-03-2023

दिन- मंगलवार

252

सरस्वती वन्दना

तर्ज़ ~ तेरा मेरा प्यार अमर फिर क्यों....

मंगलकारी, विघ्नविनाशिनी,
कमलासिनी मातु नमन।
ब्रह्मचारिणी, वागीश्वरी,
शक्तिस्वरूपा मातु नमन।।

चित्त स्वरूपा, हे जगमाता!
ज्ञान हमको दीजिए।
सत्यस्वरूपा, वीणापाणि,
शरण हमको लीजिए।
ब्राह्मणी, रूद्राणी माता,
हे जगजननी मातु नमन।।
मंगलकारी.....

मुक्तकेशी, हे जगदीश्वरी!
अज्ञान को ही मिटाइए।
जग में छाया है अंधेरा,
रोशनी अब दिखाइए।
जय परमेश्वरी, कलातीता,
ज्ञान प्रदायिनी मातु नमन।।
मंगलकारी....

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 22.03.2023

दिन- बुधवार

253 गीत- ये बेटियाँ....

तर्ज़ -दया कर दान भक्ति का...

सुनो इन बेटियों को तुम, नजर अंदाज मत करना..2
ये बेटी फूल सी नाज़ुक, कभी अपमान मत करना...2

बहा दो स्नेह की गंगा, लुटाओ प्यार बेटी पर...2
न रोको राह बन रोड़ा, इसे हर आसमां देना....
ये बेटी फूल सी नाज़ुक, कभी अपमान मत करना...2

यही दुर्गा, यही सीता, यही है गार्गी, घोषा...
बनी जननी, तुम्हें पाला, कभी इनकार मत करना....2
ये बेटी फूल सी नाज़ुक, कभी अपमान मत करना...2

बहन बन करके भाई की, कलाई है सजाती ये....
तो इसके प्रेयसी के रूप का सम्मान तुम करना...2
ये बेटी फूल सी नाज़ुक, कभी अपमान मत करना...2

सुनो इन बेटियों को तुम, नजर अंदाज मत करना..2
ये बेटी फूल सी नाज़ुक, कभी अपमान मत करना...2

रचना

शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 23-03-2023

दिन- गुरुवार

254

तर्ज- करो मत देर वनवारी चले आओ चले आओ

गीत- सुनो अर्जी मेरे ईश्वर चले आओ चले आओ

सुनो अर्जी मेरे ईश्वर,
चले आओ चले आओ।
बिपति छायी बहुत हम पर,
सुनो मम टेर इत धाओ।।

अजामिल की सुनी तुमने,
उबारा ग्राह-गज को भी।
कूबरी और गणिका को,
तारा, सबकी सुनी तुमने।।
हमारे जैसा न कोई,
मेरे उद्धार हित आओ।
सुनो अर्जी मेरे ईश्वर,
चले आओ चले आओ।।

दिया तुम ज्ञान ऊधौ को,
कही गीता है अर्जुन को।
धरा का बोझ कम कीन्हा,
बताया श्रेष्ठ कर्मन को।।
जगत ये त्रस्त है भारी,
जो पापी काल बन जाओ।
सुनो अर्जी मेरे ईश्वर,
चले आओ चले आओ।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 24.03.2023

दिन- शुक्रवार

255

तर्ज - आपस में प्रेम करो देश प्रेमियों....

गीत - निपुण प्रदेश का निर्माण करो

शिक्षा की अलख जगाओ, दीक्षा घर-घर पहुँचाओ।
अलोंग रीड अपनाओ, सब शिक्षक बन्धु योगदान करो।
निपुण प्रदेश का निर्माण करो....

सब गाँव-शहरों में, बात ये समझानी।
बच्चों की शिक्षा की, न हो कोई हानि।
सी0 एम0 योगी जी ने, निपुण प्रदेश का सपना देखा है।
निपुण भारत कार्यक्रम, शिक्षा की जीवन रेखा है।
इसका सम्मान करो...योगदान करो...
निपुण प्रदेश का निर्माण करो।।

आओ मिलकरके ये, कसम उठालें हम।
अपने जनपद को नहीं, रखना किसी से भी कम।
अपना बागपत समय से गर, ये लक्ष्य प्राप्त कर जाएगा।
सबसे पहले यू0 पी0 में, निपुण जनपद बन जाएगा।
मिलकर बलिदान करो... योगदान करो...
निपुण प्रदेश का निर्माण करो।।

ध्यानाकर्षण, आधारशिला से हमको है ये आस।
शिक्षण संग्रह में हर, शिक्षक को विश्वास।
निष्ठा देती है हम सबको, शिक्षण की तकनीकियाँ।
दीक्षा घर-घर जाकर बाँटे, ज्ञान की बारीकियाँ।
इन पर अभिमान करो... योगदान करो...
निपुण प्रदेश का निर्माण करो।।

बच्चे ही कृष्णा, बच्चे ही पारथ हैं।
नन्हे बच्चों में बसता, भविष्य का भारत है।
रामकिशन भारती तुझे, जन-जन में अलख जगानी है।
विद्याहीन नर पशु समाना, सबने सुनी कहानी है।
इतनी पहचान करो... योगदान करो...
निपुण प्रदेश का निर्माण करो।।

रचना - रामकिशन भारती (प्रा0अ0)
प्रा0 वि0 फैजुल्लापुर
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 25.03.2023

दिन- शनिवार

256

गीत - एक शहीद की दुल्हन

तर्ज- एक डोली चली...

मेंहदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी,
दरवाजा निहारे, कभी देखे घड़ी।
कल गये हैं पिया सरहद पर मेरे,
है उसे इन्तजार आएँगे किस घड़ी।

बात कल की ही है, खेलती उस गली,
बन गई फूल कब, अधखिली सी कली।
पुष्प-हार में पिरोयी गयी पंखुड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।।

आ गयी लाँघ के, माँ की दहलीज को,
याद करती है झूलों को औ तीज को।
आँख से झर रही आँसुओं की लड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।

भागती-भागती आयी थी द्वार पर,
पत्र को खोला उसने थोड़ा घबराकर।
सन्देशा पढ़के हतप्रभ सी रह गयी खड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।।

कल विदा होकर आई थी इस आँगना,
आज सीमा पे क्योंकर गया साजना।
कुदरत ने करी है ये क्यों गड़बड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।।

माह कितने ही बीते हैं इन्तजार के,
डाकिया एक दिन आया फिर द्वार पे।
खिल गयी देख उसको ज्यों फुलझड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।।

था शहीद हुआ रण में उसका पति,
सरहद पर मिली थी उसे वीरगति।
एक अभागी सुहागन की माँग उजड़ी,
मेहंदी हाथों मड़ी, एक दुल्हन खड़ी।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
क्षेत्र- धनीपुर, अलीगढ़, उ०प्र०

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 27/03/2023

दिन- सोमवार

257 गीत- वतन की खुश्बू बिखरे जग में

तर्ज़- अगर न मिलते इस जीवन में

चले निरंतर रुके नहीं जो, बन जाएँ वो धारा।
वतन की खुश्बू बिखरे जग में, काम करें वो न्यारा।।

अति प्राचीन धरा भारत की, सबसे सुन्दर प्यारी।
प्रकृति रूप लगे अति मनोरम, सुखदायी हितकारी।।
प्रचुर सम्पदा पोषित भारत, थरती का उजियारा।
वतन की खुश्बू.....।।

गार्गी जैसी विदुषी और रहे ऋषि अनेक उपकारी।
प्रह्लाद और ध्रुव से बालक संस्कृति के सहचारी।।
चन्द्रगुप्त, चाणक्य से योद्धा, ज्ञानी की जयकारा।
वतन की खुश्बू.....।।

देश भी अपना प्रगति राह पर देखो है चल निकला।
कदम हुए मजबूत आज हैं, कहे ना कोई फिसला।।
हर्षित मन से जन-जन गाएँ, भारतवर्ष हमारा।
वतन की खुश्बू.....।।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०–बड़ागाँव
जनपद–वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 28/03/2023

दिन- मंगलवार

258

तर्ज- ज़िन्दगी की न टूटे लड़ी

पेड़ो की न हो धरा में कमी

पेड़ों की न हो धरा में कमी,
करें ऐसा जतन हम सभी।
लम्बे-लम्बे पेड़ों को समझो।-2
जिनसे मिलती रहे जिंदगी,
करें ऐसा जतन हम सभी।।
पेड़ों की न हो धरा.....

उन वृक्षों की कीमत को जानो,
जो पशु- पक्षी का सहारा बने।
वृक्ष कुछ लेता नहीं है कभी,
लकड़ी,फल, हवा देता सदा।-2
इनकी पूजा करे हर कोई,
करें ऐसा जतन हम सभी।
पेड़ो की न हो धरा .....

आओ ले ले प्रतिज्ञा सभी,
वायुमणडल प्रदूषित न हो।
बिना वृक्षों के खुशियाँ नहीं,
पर्यावरण दिवस निरर्थक न हो।-2
प्राण वायु की न हो कमी,
करें ऐसा जतन हम सभी।
पेड़ों की न हो धरा.....

उन वादों, कानूनों का क्या,
जिनको मन से न माने कोई।
होता वृक्षों का दोहन अधिक,
नहीं करता है वृक्षारोपण कोई।-2
वृक्षों से धरा हो भरी,
करें ऐसा जतन हम सभी।
पेड़ो की न हो धरा.....

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 29/03/2023

दिन- बुधवार

259

तर्ज- जब हम जवां होंगे...

छात्र विदाई गीत

बच्चों तुम जाओगे, सबको रुलाओगे।
जाकर के जीवन की, नयी शुरुआत करोगे।।
कामयाब बनोगे.....

कक्षा में नवप्रवेशी बनकर आए थे,
संग शैतानी बालपन लाए थे।
लेकर नया अनुभव नया इतिहास रचोगे,
कामयाब बनोगे....

भूल भुलैया जीवन की ना उलझाए,
दूर रहे तुमसे गम के काले साए।
गुरुओं का है आशीष सदा तुम नाम करोगे,
कामयाब बनोगे.....

संस्कार आदर्शों को ना भूलोगे,
ज्ञान निधि के पथ से तुम ना डोलोगे।
मूल्यों की यह पूँजी, सदा आबाद करोगे,
कामयाब बनोगे...

रचना-

ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 30/03/2023

दिन- दिन- गुरुवार

260

शिक्षा से उजियारा

तर्ज- जनम-जनम का साथ है, तुम्हारा हमारा...

शिक्षा से ही जीवन में दिखता है उजियारा,
इसने जीवन सँवारा।
खिलते फूल बनो, हरषाओ, शिक्षा बने सहारा।।....

बचपन से जो सीखा, जीवन में अपनाया,
मात-पिता, गुरु ने जीवन के मूल्यों को सिखाया।
बड़ा हुआ तो सामाजिक दायित्वों को भी निभाया।।.....

राष्ट्र प्रेम, परिवार से प्रेम सभी करते हैं,
अपने सुखद पलों में जीवन जी लेते हैं।
अच्छी शिक्षा और आचरण देता उन्हें सहारा।।....

सरकारी शिक्षा से जीवन सफल बनाओ,
विद्यालय में आकर पढ़लो और पढ़ाओ।
सरकारी खर्चे पर पौष्टिक भोजन मिले तुम्हारा।।....

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
वि० ख०- मथुरा, जिला- मथुरा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 31-03-2023

दिन- बुधवार

261

तर्ज..... अँखियों के झरोखे से

गीत- स्कूल चलो अभियान

ये सत्र में आओ हम यह अभियान चलाएँ,
जो स्कूल नहीं आते, उन्हें स्कूल हम लाएँ।
बन्द करके पढ़ाई को, जो बैठे हैं घरों में,
उन सबको पढ़ाएँ, शिक्षा उन्हें दिलाएँ।।

बिन शिक्षा पाये बच्चा बड़ा होने लगा है,
अपने अच्छे भविष्य को खोने लगा है।
पढ़ने की उम्र में जो, बैठे स्कूल को भूल के,
वो जीवन भर पछताये, कभी आगे न बढ़ पाये।।
नये सत्र....

मिलती है मुफ्त शिक्षा सरकारी स्कूल में,
तुम पढ़ने आओ रोज पास के स्कूल में।
अध्यापक वहाँ मिलेंगे शिक्षा देने के वास्ते,
कहीं कोई भी बच्चा बिन पढ़े न रह जाये।।
नये सत्र.....

इस युग की पीढ़ी अब सारी पढ़ी हो,
शिक्षा पाकर अपने पैरों पे खड़ी हो।
खुले आसमां पे बच्चे उड़े के पंख लगा के,
इन्हे शिक्षित बनाएँ, रोज स्कूल पहुँचाएँ।।
नये सत्र..

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

रचनाकारों की सूची

01- शहनाज बानो, चित्रकूट
02- जुगलकिशोर त्रिपाठी, झांसी
03- मंजू शर्मा, हाथरस
04- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
05- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
06- सीमा शर्मा, बागपत
07- अरविन्द कुमार सिंह, वाराणसी
08- भावना शर्मा, मेरठ
09- डा० शालिनी गुप्ता, सोनभद्र
10- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
11- शिखा वर्मा, सीतापुर
12- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
13- ज्योति विश्वकर्मा, बांदा
14- रामकिशन भारती, बागपत
15- नैमिष शर्मा, मथुरा

मार्गदर्शन
राजकुमार शर्मा, चित्रकूट
तकनीकी सहयोग
जितेन्द्र कुमार, बागपत
ज्योति सागर, बागपत

संकलन :- काव्य मंजरी टीम, मिशन शिक्षण संवाद